ISBN: 978-81-949512-6-1

भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
(कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग)
दलहन विकास निदेशालय
छठवीं मंजिल, विन्ध्याचल भवन
भोपाल-462004 (म.प्र.)

सत्यमेव जयते

Government of India
Ministry of Agriculture & Farmers Welfare,
Deptt. of Agriculture, Cooperation & Farmers Welfare
Directorate of Pulses Development
6th Floor, Vindhyachal Bhavan
Bhopal - 462004 (M.P.)

E-mail: dpd.mp@nic.in, Telefax: 0755-2571678, Phone: 0755-2550353/ 2572313

कुल्थी

वैज्ञानिक नामः मेक्रोटिलोमा यूनीफ्लोरम

क्षेत्रफल : 4.27 लाख हे.
उत्पादन : 2.04 लाख टन
उपज : 478 कि.ग्रा./हे.

(औसत 2014–15 से 2018–19)

सर्वोच्च उत्पादन –
2.63 लाख टन (2010–11)

कुल्थी का क्षेत्र उत्पादन एवं उपज (2010–11 से 2018–19)

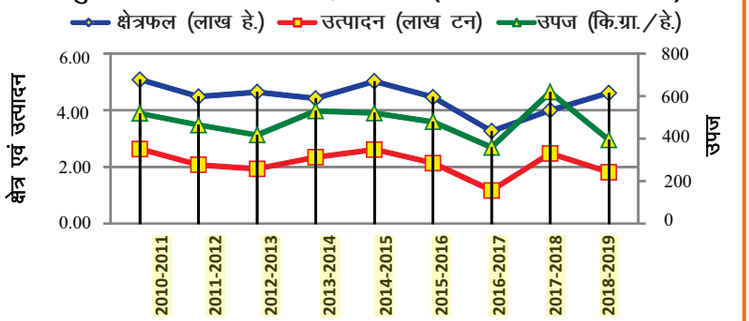

प्रमुख राज्य (औसत : 2014–15 से 2018–19)

(क्षेत्रफल : लाख हे., उत्पादन : लाख टन, उपज : कि.ग्रा./हे.)

मुख्य राज्य	क्षेत्रफल	% योगदान	उत्पादन	% योगदान	उपज
कर्नाटक	1.59	37	0.65	32	406
तमिलनाडु	0.69	16	0.45	22	650
आन्ध्रप्रदेश	0.53	12	0.21	10	395
छत्तीसगढ़	0.46	11	0.16	8	357
झारखण्ड	0.23	5	0.16	8	703
उपरोक्त योग	**3.50**	**(82%)**	**1.63**	**(80%)**	**466**
सम्पूर्ण भारत	**4.27**		**2.04**		**478**

प्रमुख जिले (2018–19)

प्रमुख राज्य	प्रमुख जिले
कर्नाटक (91%)	चामराजनगर, मैसूर, मांड्या, तुमकुर, चिकमगलूर, रामनगरम, कोलार, हावेरी, कोप्पल, चित्रदुर्ग
तमिलनाडु (93%) (वर्ष 2017–18 के आंकड़े)	कृष्णागिरि, धर्मपुरी, वेल्लोर, तिरुवनमलाई, तिरुप्पुर, सेलम, करूर, डिंडुल, कोयंबटूर
आन्ध्रप्रदेश (98%)	चित्तूर, अनंतपुर, श्रीकाकुलम, वाई.एस.आर. कडप्पा, विजयनगरम, प्रकाशम, कृष्णा
छत्तीसगढ़ (100%)	राजनांदगांव, गरियाबंद, जांजगीर, बीजापुर

आर्थिक महत्व : कुल्थी दक्षिण भारत की एक महत्वपूर्ण फसल है। यह फसल आम तौर पर उगाई जाती है जब किसान समय पर बारिश न होने के कारण अन्य फसल बोने में असमर्थ होता है। मौसम्बी, संतरा नींबू आदि के बाग की खाली जगह में भी उगाया जाता है। कुल्थी को वनस्पति प्रोटीन के सबसे सस्ते स्रोत के रूप में जाना जाता है।

फसल उत्पादः

- साबुत अनाज के रूप में, अंकुरित रूप में दाल के रूप में सेवन किया जाता है।
- नमकीन खाद्य उत्पाद– पापड़, करी और साबुत दाने।
- भोजन, चारा, हरी खाद के रूप में उपयोग किया जाता है।
- औषधीय उपयोग– सूखी खांसी का इलाज, किडनी (पथरी) की परेशानी, अनियमित मासिक धर्म चक्र की आवधिकता।

उन्नत प्रजातियां :

वर्ष	प्रजातियां
2010	वी.एल. गहत –19, क्रिडालथा (सी.आर.एच.जी. –4)
2011	इंदिरा कुलथी 1 (आई.के.जी.एच. –05–01)
2012	गुजरात (दांतेवाड़ा) कुल्थी–1 (जी.आर.एच.जी. –5)
2014	क्रिडाहर्षा (सी.आर.एच.जी. –4)
2016	प्रताप कुल्थी –2 (ए.के..3), करिवर्धन (सीआरएचजी . 22), एस.एच.जी.–0628.4
2017	छत्तीसगढ़ कुल्थी–3 (बी.एच.जी..03) , छत्तीसगढ़ कुल्थी–2 (बी.एच.डब्ल्यू..1)

राज्य–वार अनुशंसित प्रजातियां :

राज्य	अनुशंसित प्रजातियां
राजस्थान	प्रताप कुल्थी –2 (ए.के..3), के.एस. 2
आन्ध्रप्रदेश	के.एस. 2, पालेम 1, पालेम 2, पायूर 2, पी.एच.जी. 9
तमिलनाडु	पायूर 2
कर्नाटक	पी.एच.जी. 9, जी.पी.एम. 6, क्रिडा –1–18 आर
गुजरात	प्रताप कुल्थी –1 (ए.के..42), जी.एच.जी.–5
उत्तराखण्ड	वी.एल. गहत –8, वी.एल. गहत –10
छत्तीसगढ़	इंदिरा कुलथी 1, (आई.के.जी.एच. –01–01)

प्रकाशक : निदेशक, दलहन विकास निदेशालय, भारत सरकार, भोपाल, म.प्र.
वेबसाइट : www.dpd.gov.in

भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
(कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग)
दलहन विकास निदेशालय
छठवीं मंजिल, विन्ध्याचल भवन
भोपाल-462004 (म.प्र.)

सत्यमेव जयते

Government of India
Ministry of Agriculture & Farmers Welfare,
Deptt. of Agriculture, Cooperation & Farmers Welfare
Directorate of Pulses Development
6th Floor, Vindhyachal Bhavan
Bhopal - 462004 (M.P.)

E-mail: dpd.mp@nic.in, Telefax: 0755-2571678, Phone: 0755-2550353/ 2572313

बुवाई ऋतु : खरीफ एवं रबी

बुवाई समय : **दाना के लिए–** अगस्त के अंत से नवंबर तक
चारा के लिए– जून–अगस्त;

अन्तराल : **खरीफ :** 40–45 से.मी.
रबी : 25–30 से.मी.

बीज गहराई : 1.5–2 से.मी.

बीज दर : **छिड़काव विधि :** 40 कि.ग्रा./हे. चारे एवं दाने के लिए
पंक्ति रोपाई : 20–30 कि.ग्रा./हे. एवं 5 से.मी. पौध से पौध की दूरी

बीजोपचार : कार्बेन्डाजिम @ 2 ग्रा./कि.ग्रा. बीज या ट्राइकोडर्मा विरडी @ 4 ग्राम /कि.ग्रा. बीज।

कल्चर एवं सूक्ष्म पोषक तत्व : राईजोबियम एवं पी.एस.बी. कल्चर प्रत्येक 5–7 ग्राम/कि.ग्रा.

सिंचाई : फूल आने के पहले व फली बनने के समय सिंचाई करें।

मिट्टी का प्रकार : फसल को हल्की मिट्टी से भारी मिट्टी में उगाया जा सकता है जो क्षारीयता से मुक्त होती हैं। केवल 1–2 जुताई के बाद पाटा वांछनीय सीड–बैड प्रदान करता है।

मौसम : कुल्थी अत्यंत सूखा प्रतिरोधी फसल है। मध्यम रूप से गर्म, शुष्क जलवायु परिस्थितियां इसके अनुकूलतम विकास के लिए उपयुक्त हैं। 25–30 डिग्री सेल्सियस तापमान तथा 50–80% के बीच सापेक्ष आर्द्रता इसकी वृद्धि के लिए उचित है।

पौध पोषक तत्व प्रबंधन : बुवाई के समय 20 किलो नाइट्रोजन, 30 किलोग्राम फॉस्फोरस/हे. आधार उर्वरक के रूप में उपयोग करें।

खरपतवार प्रबंधन : फसल के अच्छे विकास हेतु खरपतवार नियंत्रण के लिए एक प्रारंभिक निराई/गुड़ाई पर्याप्त है। अंकुरण पूर्व पेन्डीमथालिन @ 0.75–1 कि.ग्रा. सक्रिय तत्व का अनुप्रयोग करें। उसके बाद बुवाई के 20–25 दिन बाद एक हाथ से निराई करें।

उर्वरक का प्रयोग मृदा परीक्षण रिपोर्ट पर आधारित होना चाहिए।

फसल प्रणाली : फसल को शुद्ध फसल के साथ–साथ ज्वार, बाजरा, अरहर, तिल या रामतिल के साथ मिश्रित फसल के रूप में उगाया जाता है।

कटाई/थ्रेसिंग और भंडारण : विग्ना समूह के अन्य खरीफ दलहनों की तरह, साफ बीज को 3–4 दिनों के लिए धूप में सुखाया जाना चाहिए ताकि उनकी नमी की मात्रा 9–10% तक आ सके एवं उचित डिब्बे में सुरक्षित रूप से भंडारित किया जा सके।

भंडारण : कुल्थी के भंडारण हेतु मानसून की शुरुआत से पहले और मानसून के बाद एएलपी @ 1–2 टैबलेट प्रति टन के हिसाब से भंडारण सामग्री को फ्यूमिगेट करें। उपज की छोटी मात्रा को अक्रिय सामग्री (मुलायम पत्थर, चूना, राख, आदि) या खाद्य/गैर खाद्य वनस्पति तेलों को मिलाकर या 1–2% नीम की पत्तियों के पाउडर को मिलाकर भी संरक्षित किया जा सकता है।

उपज : उचित कृषि कार्यमाला को अपनाकर 6–10 क्विंटल/हेक्टेयर की उपज ले सकते हैं।

कीट और रोग प्रबंधन :

प्रमुख कीट	प्रबंधन
एफिड्स, जेसिड्स	ऑक्सीडिमेटोन मिथाइल 25 @ 1 मिली./लीटर का छिड़काव करें।
फली भेदक	एन.पी.वी. @ 250 लार्वा समतुल्य/हे. या क्विनलफॉस 25 ई.सी. @ 2 मिली./लीटर पानी का छिड़काव करें।
पीला मोजेक वायरस सफेद मक्खी	• प्रतिरोधी किस्में उगाएं। • संक्रमित पौधों को नष्ट करें। • ऑक्सीडिमेटोन मिथाइल 25 @ 2 मिली./लीटर पानी का छिड़काव करें और 15 दिनों (यदि आवश्यक हो) के बाद दोहराएं।

रोग प्रबंधन :

प्रमुख कीट	प्रबंधन
जड़ सड़न	i) कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम/किलोग्राम बीज से बीजोपचार करें। ii) संक्रमित क्षेत्रों में जल्दी बुवाई से बचें।

उच्च उत्पादन प्राप्त करने की सिफारिश :

- 3 साल में एक बार गहरी गर्मी की जुताई।
- बुवाई से पहले बीजोपचार करना चाहिए।
- उर्वरक का उपयोग मृदा परीक्षण पर आधारित होना चाहिए।
- खरपतवार नियंत्रण सही समय पर करना चाहिए।
- पौधों की सुरक्षा के लिए एकीकृत दृष्टिकोण अपनाएं।

संकलन एवं संपादन
• डॉ. पु.के. तिवारी, निदेशक
• डॉ. पु.के. शिवहरे, संयुक्त निदेशक
• डॉ. संदीप सिलावट, वरिष्ठ तकनीकी सहायक
• श्री सरजू पल्लेवार, सांख्यिकी अन्वेषक
प्रकाशन वर्ष 2021